इकाई 15 काव्य एवं उसके भेद

इकाई की रूपरेखा

15.0 उद्‌देश्य

15.1 प्रस्तावना

15.2 काव्य एवं उसके भेद

15.2.1 गद्यकाव्य– कथा और आख्यायिका

15.2.2 मुक्तक

15.2.3 युग्मक

15.2.4 महाकाव्य

15.2.5 खण्डकाव्य

15.2.6 चम्पूकाव्य

15.3 सारांश

15.4 कुछउपयोगी पुस्तकें

15.5 अभ्यास प्रश्न

15.0 उद्‌देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप –

- गद्यसाहित्य का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
- संस्कृत गद्य एवं पद्य तथा उसके भेदों का सामान्य परिचय प्राप्त करेंगे।
- मुक्तक, युग्मक, महाकाव्य, खण्डकाव्य, गद्यकाव्य उसके भेद कथा एवं आख्यायिका, चम्पूकाव्य आदि के बारे में ज्ञान प्राप्त करेंगे।
- गद्य, पद्य, एवं चम्पू काव्य के लक्षणों एवं उदाहरणों से परिचित होंगे।

15.1 प्रस्तावना

काव्य को श्रव्य एवं दृश्य दो भागों में विभक्त किया गया है। श्रव्यकाव्य भी गद्य, पद्य एवं चम्पू काव्य में विभक्त है। दृश्यकाव्य रूपक एवं उपरूपक में विभक्त है। पद्यकाव्य में छन्द, गण या मात्रा की गणना की जाती है। गद्यकाव्य में इसकी गणना नहीं की जाती। चम्पूकाव्य में गद्य और पद्य दोनों का मिश्रण होता है। **गद्यपद्यमयं काव्यं**

चम्पूरित्यभिधीयते।। प्रस्तुत इकाई में आप कथा और आख्यायिका, मुक्तक काव्य, महाकाव्य, खण्डकाव्य आदि के लक्षणों एवं उदाहरणों का अध्ययन करेंगे।

15.2 काव्य एवं उसके भेद

15.2.1 गद्यकाव्य– कथा और आख्यायिका

गद्य का उद्भव एवं विकास – गद्य का प्रथम रूप हमें यजुर्वेद की संहिताओं में प्राप्त होता है। **अनियताक्षरावसानं यजुः** तथा **गद्यात्मकं यजुः।** वाक्यों में आने वाले शब्दों की सीमा जहाँ नहीं होती ऐसे वैदिक वाक्यों को यजुस् कहते हैं। वस्तुतः ऋक् और साम पद्यात्मक तथा यजुस् विशेष कृष्ण यजुर्वेद गद्यात्मक है। काठक, मैत्रायणी संहिता आदि में गद्य की सत्ता इसी प्रकार है। अथर्ववेद में भी गद्य का प्रचुर प्रयोग है। ब्राह्मण ग्रन्थ प्रायः गद्यात्मक हैं। इनमें मुख्य शतपथ, ऐतरेय, शांखायन, तैत्तिरीय और गोपथ ब्राह्मण हैं। यज्ञों का वर्णन होने के कारण इसका प्रयोग उचित ही है। आरण्यक एवं उपनिषदों में भी गद्य की प्रचुरता है। वैदिक साहित्य में गद्य का प्रयोग बहुत ही व्यापक, उदार और उदात्त रूप में हुआ है।

प्रातिशाख्य, कल्पसूत्र, (श्रौतसूत्र, गृह्यसूत्र, धर्मसूत्र, और शुल्वसूत्र) तथा निरुक्त भी गद्य में लिखे गए हैं। वैदिक सूत्रगन्थों की परम्परा से ही शास्त्रीय गद्य का विकास हुआ। भारतीय षड्दर्शन न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा, वेदान्त में भी गद्य की प्रचुर मात्रा है। संस्कृत व्याकरण भी इसी सूत्रशैली में विकसित हुआ। पाणिनि की अष्टाध्यायी इसका निदर्शन है।

पुराणों का अधिकांश भाग पद्यमय है। इनमें यत्र-तत्र गद्य भी उपलब्ध है। पौराणिक गद्य को लौकिक व वैदिक गद्य के मध्य सेतु कहा जा सकता है। इसकी भाषा सहज एवं प्रांजल है। पद्य की भाँति गद्य में भी प्रासादिकता, अलंकारिता एवं प्रौढ़ता दृष्टिगोचर होती है। लौकिक गद्यकाव्य परम्परा का अवलोकन करें तो गुणाढ्य, सुबन्धु, दण्डी, बाणभट्ट एवं पं0 अम्बिकादत्त व्यास की गद्यमयी प्रांजल एवं मनोहारी कृतियाँ दृष्टिपथ में आती हैं। इन कवियों ने गद्य की जो निर्झरिणी संस्कृत वाङ्मय में प्रवाहित की है उसमें अवगाहन कर सम्पूर्ण सुसंस्कृत सहृदय जनमानस अपने आपको कृतकार्य समझता है। इन्हीं सबका विवरण आगे प्रस्तुत किया जायेगा।

संस्कृत गद्य की विशेषताएँ –

संस्कृत भाषा के गद्यसाहित्य की अपनी विशिष्टता है। गद्य की मुख्य विशेषता सरलता, स्वाभाविकता, प्रवाहशीलता, रोचकता एवं संवादात्मकता है। इसमें सरल भावों व साधारण

बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया जाता है। संस्कृत गद्य की महत्त्वपूर्ण विशेषता इसकी लघुता है। जो विचार अन्य भाषा में लम्बे वाक्य में प्रकट किये जा सकते हैं, वे संस्कृत गद्य के एक ही वाक्य में अभिव्यक्त किये जा सकते हैं। जिसका कारण समास की सत्ता है, समास संस्कृत भाषा का प्राण है। समास में अधिक से अधिक अर्थ को कम से कम शब्दों में अभिव्यक्त करने की क्षमता होती है। ओज गुण के कारण संस्कृत गद्य में विशिष्ट प्रकार की भावग्राहिता होती है जिससे गद्य का सौन्दर्य पूर्णरूप से निखर उठता है। **समास की बहुलता** ओज का लक्षण है और यही ओज गद्य का प्राण है। **'ओजः समासभूयस्त्वमेतद् गद्यस्य जीवितम्'।** दण्डी की यह उक्ति है, जिसका आविर्भाव गद्य साहित्य के स्वर्णयुग में हुआ था।

संस्कृत गद्य की यह विशिष्टता प्राचीन काल से चली आ रही है। प्रथम द्वितीय शताब्दी के शिलालेखों में भी गद्य की विशेषताएँ देखी जा सकती हैं। रुद्रदामन के शिलालेख को पढ़ने से यह आभास होता है, कि हम बाण की शैली से प्रभावित गद्य पढ़ रहे हैं। यह गद्य बाण से लगभग पाँच सौ वर्ष पूर्व ही लिखा गया था। हरिषेण की प्रयागप्रशस्ति का गद्य भी इसी प्रकार प्रौढ़ समास युक्त है। शास्त्रीय ग्रन्थों में प्रौढ गद्य की पराकाष्ठा दृष्टिगोचर होती है। इस प्रकार संस्कृत-गद्य प्राचीन, प्रौढ, उपयोगी एवं महत्त्वपूर्ण है।

गद्यकाव्य के भेद –

संस्कृत गद्यकाव्य के दो मुख्य भेद माने गये हैं – कथा और आख्यायिका। अमरकोश में भी आख्यायिकोपलब्धार्था 1/6/5 और प्रबन्धकल्पनाकथा 1/6/6 कहकर भी इनका भेद किया गया है। आचार्य विश्वनाथ के साहित्यदर्पण में भी गद्य के दो भेद प्राप्त होते हैं। गद्य के भेद कथा और आख्यायिका हैं–

कथायां सरसं वस्तु गद्यैरेव विनिर्मितम्।।332।।
क्वचिदत्र भवेदार्या क्वचिद् वक्त्रापवक्त्रके।
आदौ पद्यैर्नमस्कारः खलादेर्वृत्तकीर्तनम्।।333।।
आख्यायिका कथावत्स्यात्कवेर्वंशानुकीर्तनम्।
अस्यामन्यकवीनां च वृत्तं पद्यं क्वचित्क्वचित्।। 334।।
यथा कादम्बर्यादिः।

कथा में सरसवस्तु गद्यों द्वारा ही बनायी जाती है। इसमें आर्या, वक्त्र एवं अपरवक्त्र छन्द होते हैं। प्रारम्भ में पद्यों से देवतादि को नमस्कार किया जाता है। दुर्जनादि के चरित्र का वर्णन होता है, जैसे – कादम्बरी आदि।

कथा कवि कल्पित होती है। कुछ सत्यांश भी होता है। इसमें भाषा संस्कृत या प्राकृत आदि होती हैं। इसमें केवल गद्य में रचना होती है। इसका वक्ता नायक स्वयं होता है या अन्य कोई भी हो सकता है। इसमें स्वचरित का वर्णन नहीं होता। उच्छ्वासों में विभाजन नहीं होता। कथा में वक्त्र और अपरवक्त्र छन्दों का प्रयोग नहीं होता। आचार्य विश्वनाथ का मानना है कि कहीं-कहीं पर इन छन्दों का तथा आर्या का प्रयोग हो भी सकता है। कन्याहरण, संग्राम, विप्रलम्भ एवं प्राकृतिक वर्णन होता है।

आख्यायिका –

आख्यायिका कथा के समान होती है। इसमें कविवंश का वर्णन होता है। अन्य कवियों का वृतान्त तथा पद्य भी कहीं-कहीं रहता है। आख्यायिका 'आश्वास' में विभक्त होता है। इसमें आर्या, वक्त्र और अपरवक्त्र छन्दों के द्वारा अन्योक्ति के माध्यम से आश्वास के आरम्भ में आगामी कथा की सूचना प्रदान की जाती है। जैसे हर्षचरित पंचतन्त्रादि।

आख्यायिका कथावत्स्यात्कवेर्वंशानुकीर्तनम्।
अस्यामन्यकवीनां च वृत्तं पद्यं क्वचित्क्वचित्।।334।।
कथांशानां व्यवच्छेद आश्वास इति बध्यते।
आर्यावक्त्राणां छन्दसा येन केनचित्।।335।।
अन्यापदेशेनाश्वासमुखे भाव्यर्थसूचनम्।

यथा– हर्षचरितादिः।

'अपि त्वनियमो दृष्टस्तत्राप्यन्यैरुदीरणात्'। इति दण्ड्याचार्यवचनात् केचित् आख्यायिका नायकेनैव निबद्धव्या' इत्याहुः, तदयुक्तम्। आख्यानादयश्च कथाख्यायिकयोरेवान्तर्भावान्न पृथगुक्ताः।

यदुक्तं दण्डिनैव–

'अत्रैवान्तर्भविष्यन्ति शेषाश्चाख्यानजातयः'। इति।

एषामुदाहरणम्– पंचतन्त्रादि।

कुछ आचार्यों ने कहा है कि– आख्यायिका नायक के द्वारा ही निबद्ध होती है। यह उपयुक्त नहीं है, जैसा कि आचार्य दण्डी ने कहा है– किन्तु अनियमन देखा गया है अर्थात् आख्यायिका नायक के द्वारा निबद्ध होती है– यह कोई नियम नहीं है, क्योंकि

यह दूसरे लोगों के द्वारा भी कही गयी है। कथा एवं आख्यायिका में अन्तर्भाव होने के कारण आख्यान आदि पृथक् नहीं कहे गये हैं। जैसा कि दण्डी ने कहा है – शेष आख्यान, जाति आदि इन्हीं में अन्तर्भूत होंगे। इनके उदाहरण हैं पंचतन्त्रादि।

यह ऐतिहासिक घटना पर निर्भर होती है। इसकी भाषा केवल संस्कृत होती है इसका विभाजन उच्छ्वासों में होता है। वक्त्र और अपरवक्त्र छन्दों के द्वारा भावी घटना की सूचना दी जाती है। इसमें कहीं-कहीं पद्यों का भी प्रयोग होता है। स्वचरित एवं अन्य कवि चरित का वर्णन होता है। नायक स्वयं वक्ता होता है यह आत्मकथा के रूप में होती है। (आचार्य रुद्रट नायक को ही वक्ता होना आवश्यक नहीं मानते)। कन्याहरण, संग्राम, विप्रलम्भ एवं प्राकृतिक वर्णन नहीं होता।

गद्य के अवान्तर भेद –

समास के प्रयोग तथा वृत्तिभाग के निवेश की दृष्टि से गद्य के चार भेद माने जाते हैं– 1. मुक्तक, 2. वृत्तगन्धि, 3. उत्कलिकाप्राय, 4. चूर्णक।

समास से रहित गद्य रचना को मुक्तक कहते हैं। जहाँ गद्य में छन्द के अंश आ जाये उसे वृत्तगन्धि कहते हैं। लम्बे समासों से युक्त गद्य उत्कलिकाप्राय कहलाता है। अल्प समासों से युक्त गद्य को चूर्णक कहा जाता है।
आचार्य विश्वनाथ ने इस प्रकार कहा है–

आद्यं समासरहितं वृत्तभागयुतं परम्।।331।।
अन्यद् दीर्घसमासाढ्यं तुर्यं चाल्पसमासकम्।

'वृत्तगन्धि' गद्य वस्तुतः पद्य प्रयोग का नामान्तर है यह कोई महत्त्वपूर्ण भेद नहीं है शेष तीनों गद्य के भेद बाण आदि कवियों के द्वारा प्रयुक्त हुये हैं।

अग्निपुराण में इन दो भेदों के अतिरिक्त खण्डकथा, परिकथा और कथानिका नामक भेद भी किये गये हैं। पं अम्बिकादत्त व्यास ने 'उपन्यास' नामक भेद भी माना है। उपन्यास और लघुकथा के रूप में आज भी गद्य रचना होती है। छन्द के बन्धन से रहित पद समूह को गद्य कहते हैं। यह गद्य चार प्रकार का होता है– आचार्य विश्वनाथ साहित्यदर्पण में गद्य का लक्षण देते हुए कहते हैं –

अथ गद्यकाव्यानि। तत्र गद्यम् –

वृत्तगन्धोज्झितं गद्यं, मुक्तकं वृत्तगन्धि च ।।330।।

भवेदुत्कलिकाप्रायं चूर्णकं च चतुर्विधम्।

आद्यं समासरहितं, वृत्तभागयुतं परम्।।331।।

अन्यद्दीर्घसमासाढ्यं, तुर्यं चाल्पसमासकम्।।

कथायां सरसं वस्तु गद्यैरेव विनिर्मितम्।।332।।

मुक्तकं यथागुरुर्वचसि– इत्यादि। वृत्तगन्धि यथा मम– 'समरकण्डूलनिविडभुजदण्डकुण्डलीकृतकोदण्डशिजिंनीटंकारोज्जागरितवैरिनगर' इत्यादि। अत्र 'कुण्डलीकृतकोदण्ड'– इत्यनुष्टुब्वृत्तस्य पादः, 'समरकण्डूल' इति च प्रथमाक्षरद्वयरहितस्तस्यैव पादः।

उत्कलिकाप्रायं यथा ममैव– 'अणिसविसुमरणिसिदसरविसरविदलिदसमरपरिगदपवरपरवल'– इत्यादि।

चूर्णकं यथा मम– 'गुणरत्नसागर! जगदेकनागर! कामिनीमदन्! जनरंजन'। इत्यादि।

गद्यकाव्यों का निरूपण करते हैं। उनमें गद्य– जिनमें छन्दलेशमात्र भी न हो उसे गद्य कहते हैं। वह चार प्रकार का होता है– मुक्तक, वृत्तगन्धि, उत्कलिकाप्राय तथा चूर्णक। इनमें पहला मुक्तक– समास रहित, दूसरा छन्द के अंश से युक्त, तीसरा उत्कलिकाप्राय– दीर्घसमास से पूर्ण तथा चौथा चूर्णक– अल्पसमासवाला होता है। मुक्तक जैसे– 'गुरुर्वचसि' इत्यादि।

वृत्तगन्धि जैसे– (मेरा– विश्वनाथ का) 'समरकण्डूल' इत्यादि। युद्ध की खुजली के कारण निविड भुजदण्डों के द्वारा कुण्डलीकृत धनुष की प्रत्यंचा के टंकार से शत्रु नगरों की नींद हराम करने वाले राजन्। यहाँ 'कुण्डतीकृतकोदण्ड' में अनुष्टुप् छन्द का चरण अंश है। 'समरकण्डूल' में भी पहले के दो अक्षरों से रहित अनुष्टुप् का ही अंश है।

उत्कलिकाप्राय– जैसा कि मेरा ही 'अणिस' इत्यादि। निरन्तर प्रसरणशील एवं तीक्ष्ण बाणों के गिरने से युद्धभूमि में इकठ्ठे श्रेष्ठ शत्रु सैनिकों को नष्ट कर देने वाले (हे राजन्!) इत्यादि।

चूर्णक जैसे (मेरा) गुणरत्नसागर्! जगत् में एकमात्र चतुर! कामिनियों के कामदेव! जनों का रंजन करने वाले राजन्! इत्यादि।

1. **मुक्तक** – मुक्तक समास से रहित गद्य होता है। यथा– 'गुरुर्वचसि-पृथुरुरसि' इत्यादि। इसमें प्रत्येक पद्य मुक्त होता है।
2. **वृत्तगन्धि** – पद्य के अंश से युक्त गद्य वृत्तगन्धि कहलाता है। **जैसे– समरकण्डूलनिविडभुजदण्डकुण्डलीकृतकोदण्डशिजिंनीटंकारोज्जागरितवैरिनगर.... इत्यादि।**

   यहाँ 'कुण्डलीकृतकोदण्ड' पद अनुष्टुप् छन्द का चरण है और समरकण्डूल पद भी पहले के दो अक्षरों को हटा देने पर अनुष्टुप् छन्द का चरण बन जाता है।
3. **उत्कलिकाप्राय** – दीर्घ समास से युक्त गद्य को उत्कलिकाप्राय कहते हैं। **जैसे–'अणिसविसुमरनिशितशरविसरविदलितसमरपरिगतप्रवरपरबलः' (अनिशविसृमरनिशितशरविसरविदलितसमरपरिगतप्रवरपरबल..) इत्यादि।**प्रस्तुत गद्य में लम्बा समस्त पद परिलक्षित होता है।
4. **चूर्णक–** दो या तीन पदों के छोटे-छोटे समास वाले गद्य को चूर्णक कहते हैं। जैसे– गुणरत्नसागर, जगदेकनागर, कामनीमदन, जनरंजन, इत्यादि। यहाँ अल्प समास वाले पद स्पष्ट दिखाई देते हैं।

15.2.2 मुक्तक

जो केवल सुना जा सके– जिनका रंगमंच पर अभिनय न हो सके उसे श्रव्य काव्य कहते हैं। इनके दो भेद होते हैं। गद्य एवं पद्य। छन्दबद्धकाव्यों को पद्य कहते हैं। जिसमें और पद की अपेक्षा नहीं रहती है उसे मुक्तक कहते हैं। मुक्तक मुक्त या स्वतन्त्र हुआ करते हैं।

श्रव्यं श्रोतव्यमात्रं तत्पद्यगद्यमयं द्विधा।।313।।
छन्दोबद्धपदं पद्यं तेन मुक्केनमुक्तकम्।

तत्र मुक्तकं यथा मम –

सान्द्रानन्दमनन्तमव्ययमजं यद्योगिनोऽपि क्षणं
साक्षात्कर्तुमुपासते प्रति मुहुर्ध्यानैकतानाः परम्।
धन्यास्ता मथुरापुरीयुवतयस्तद्ब्रह्म याः कौतुका–
दालिङ्गन्ति समालपन्ति शतधाऽकर्षन्ति चुम्बन्ति च।।

15.2.3 युग्मक

जिस पद्यमय काव्य में दो पद्यों की परस्पर अपेक्षा रहे उसे युग्मक कहते हैं।

द्वाभ्यां तु युग्मकं सान्दानितक त्रिभिरिष्यते।।314।।

कलापकं चतुर्भिश्च पंचभिः कुलकं मतम्।

दो श्लोकों का परस्पर सम्बन्ध रहने से निम्नलिखित पद्य युग्मक का उदाहरण है–

युग्मकं यथा मम –

किं करोषि करोपान्ते कान्ते! गण्डस्थलीमिमाम्।

प्रणयप्रवणे कान्तेऽनैकान्ते नोचिताः क्रुधः।।

इति यावत्कुरङ्गाक्षीं वक्तुमीहामहे वयम्।

तावदाविरभूच्चूते मधुरो मधुपध्वनिः।।

जैसे– नायक मित्र से कह रहा है–

हे प्रिये! तुम हाथ पर (अपनी) इस कपोलस्थली को क्यों रखते हो? प्रेमासक्त अनन्य परायण कान्त के ऊपर क्रोध करना उचित नहीं है। (हे मित्र!) मैने ज्यों ही उस मृगनयनी से इस प्रकार कहने की कामना की त्यों ही आम्र वृक्ष पर मधुर भ्रमर ध्वनि होने लगी। इसी प्रकार अन्य आदि का भी उदाहरण समझना चाहिए।

15.2.4 महाकाव्य

महाकाव्य का उद्भव एवं विकास –

संस्कृत महाकाव्य के स्वरूप का सर्वप्रथम बीज ऋग्वेद में प्राप्त होता है। यह ऋग्वेद के दान-सूक्तों, संवादसूक्तों, आख्यानसूक्तों स्तुतियों में यथा– इन्द्र, विष्णु, वरुण, उषा आदि में पाया जाता है। इसके बाद ब्राह्मण ग्रन्थों, आरण्यकों एवं उपनिषदों में भी संवाद, अवतरण एवं दृष्टान्त प्राप्त होते हैं जो महाकाव्य के उद्भव के स्रोत के प्रारम्भिक प्रक्रिया में सहायक होते हैं। काव्य या महाकाव्य के उद्भव का वास्तविक प्रेरणास्रोत वाल्मीकिकृत रामायण ही है। वाल्मीकि को 'आदिकवि' एवं रामायण को 'आदिकाव्य' कहा जाता है। रामायण को ही आधार मानकर अश्वघोष, कालिदास, भारवि, माघ, श्रीहर्ष आदि कवियों ने अपने-अपने महाकाव्यों का विकास किया। इसके बाद महाभारत को भी महाकाव्य

कहा जाता है। जो परवर्ती कवियों एवं नाटककारों की रचनाओं के लिए विषय-वस्तु प्रदान किया।

जिसमें सर्गों का निबन्धन होता है उसे महाकाव्य कहते हैं। इसमें एक देवता या सद्वंश क्षत्रिय जिसमें धीरोदात्तत्वादि गुण हों नायक होता है अथवा एक वंश में उत्पन्न कुलीन अनेक राजा भी नायक हो सकते हैं। शृंगार, वीर, शान्त में से कोई एक रस अंगी (मुख्य) होता है। अन्य सभी रस अंग (गौण) होते हैं। इसमें नाटक की सभी मुख आदि सन्धियाँ विद्यमान रहती हैं। कथा ऐतिहासिक या लोक में प्रसिद्ध सज्जन सम्बन्धिनी होती है। पुरुषार्थ चतुष्टय (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) में से एक प्रधान प्रयोजन होता है।

आरम्भ में आशीर्वाद अथवा वस्तुनिर्देश रहता है। कहीं पर दुर्जनों की निन्दा और सज्जनों का गुण कीर्तन होता है। महाकाव्य के सर्गों में एक ही छन्द होता है किन्तु सर्ग का अन्तिम पद्य भिन्न छन्द का होता है। कहीं-कहीं सर्ग में अनेक छन्दों का प्रयोग भी होता है। इसमें न अधिक छोटे न अधिक बड़े आठ से अधिक सर्ग होते हैं। सर्ग के अन्त में आगामी कथा की सूचना होती है। इसमें सन्ध्या, सूर्य, चन्द्र, रात्रि, प्रदोष, अंधकार, दिन प्रातःकाल, मध्यान, मृगया (शिकार) पर्वत, ऋतु (छः) वन और समुद्र इत्यादि का वर्णन होता है। इसमें सम्भोग शृंगार, विप्रलम्भ शृंगार, मुनि, स्वर्ग, नगर, यज्ञ, युद्ध, यात्रा, विवाह, मन्त्र, पुत्र और अभ्युदय आदि का सांगोपांग वर्णन होना चाहिए। इसका नाम कवि के नाम से (माघ आदि) या चरित्र के नाम से जैसे कुमारसम्भव अथवा चरित्र नायक के नाम से जैसे रघुवंश आदि के नाम से होना चाहिए। सर्ग के वर्णनीय वृत्तान्त के अनुसार सर्ग का नाम रखा जाता है। सन्धियों के अंग यथासम्भव रखना चाहिए। सर्ग की समाप्ति में अन्य छन्दों को रखना चाहिए। जलक्रीडा, मधुपानादिक सांगोपांग होना चाहिए। महाकाव्य के उदाहरण जैसे रघुवंश, शिशुपालवध रघुवंशादि।

ऋषिप्रणीत काव्य में सर्गों का नाम आख्यान होता है, जैसे महाभारत। प्राकृत काव्यों में सर्गों का नाम 'आश्वास' होता है। इसमें स्कन्धक या कहीं गलितक छन्द होते हैं जैसे सेतुबन्ध अथवा कुवलयाश्चरित। अपभ्रंश भाषा से निबद्ध महाकाव्य में सर्ग को कुडवक कहा जाता है और उसमें अपभ्रश भाषा के योग्य अनेक प्रकार के छन्द होते हैं जैसे कर्णपराक्रम।

सर्गबन्धो महाकाव्यं तत्रैको नायकः सुरः।।315।।

सद्वंशः क्षत्रियो वापि धीरोदात्तगुणान्वितः।

एकवंशभवा भूपाः कुलजा बहवोऽपि वा ।।316।।

शृङ्गारवीरशान्तानामेकोऽङ्गी रस इष्यते।

अङ्गानि सर्वेऽपि रसाः सर्वे नाटकसन्धयः।।317।।

इतिहासोद्भवं वृत्तमन्यद्वा सज्जनाश्रयम्।

चत्वारस्तस्य वर्गाः स्युस्तेष्वेकं च फलं भवेत्।।318।।

आदौ नमस्क्रियाशीर्वा वस्तुनिर्देश एव वा।

क्वचिनिन्दा खलादीनां सतां च गुणकीर्तनम्।।319।।

एकवृत्तमयैः पद्यैरवसानेऽन्यवृत्तकैः।

नातिस्वल्पा नातिदीर्घाः सर्गा अष्टाधिका इह।।320।।

नानावृत्तमयः क्वापि सर्गः कश्चन दृश्यते।

सर्गान्ते भाविसर्गस्य कथायाः सूचनं भवेत्।।321।।

संन्ध्यासूर्येन्दुरजनीप्रदोषध्वान्तवासराः।

प्रातर्मध्याह्नमृगयाशैलर्तुवनसागराः।।322।।

संभोगविप्रलम्भौ च मुनिस्वर्गपुराध्वराः।

रणप्रयाणोपयममन्त्रपुत्रोदयादयः।।323।।

वर्णनीया यथायोगं सांगोपांगाा अमी इह।

कवेर्वृत्तस्य वा नाम्ना नायकस्येतरस्य वा।।324।।

नामास्य सर्गोपादेयकथया सर्गनाम तु।

सन्ध्यङ्गानि यथालाभमत्र विधेयानि 'अवसानेऽन्यवृत्तकैः' इति बहुवचनमविवक्षितम्।

साङ्गोपाङ्गा इति जलकेलिमधुपानादयः।

यथा– रघुवंश–शिशुपालवध–नैषधादयः।

यथा वा मम राघवविलासादिः।

अस्मिन्नार्षे पुनः सर्गा भवन्त्याख्यानसंज्ञकाः।।325।।

अस्मिन्महाकाव्ये। यथा – महाभारतम्।

प्राकृतैर्निर्मिते तस्मिन्सर्गा आश्वाससंज्ञकाः।

छन्दसा स्कन्धकेनैतत्क्वचिद् गलितकैरपि।।326।।

यथा– सेतुबन्धः। यथा वा मम– कुवलयाश्चरितम्।

अपभ्रंशनिबद्धेऽस्मिन्सर्गाः कुडवकाभिधाः।

तथापभ्रंशयोग्यानि च्छन्दांसि विविधान्यपि।।327।।

यथा– कर्णपराक्रमः।

15.2.5 खण्डकाव्य

गीतिकाव्य को ही खण्डकाव्य भी कहते हैं। इसमें कवि अपनी वैयक्तिक चेतना और आनन्दवेदना की अभिव्यक्ति करता है। वेद के साथ ही रामायण या महाभारत से भी इसका उद्भव माना जा सकता है। गीतिकाव्य या खण्डकाव्य में जीवन के एक पक्ष अथवा घटना की अभिव्यक्ति होती है जबकि महाकाव्य में मानव जीवन के सम्पूर्ण घटनाओं का वर्णन होता है। गीतिकाव्य महाकाव्य की अपेक्षा कहीं अधिक मनोरम बन जाता है क्योंकि इसमें कल्पना की कमनीयता, भावों की सुकुमारता और पद्यों की हृदयहारिणी गेयता का अभिनव सामंजस्य प्रस्फुटित होता है। खण्डकाव्य (गीतिकाव्य) का उदाहरण –महाकवि कालिदास का 'मेघदूत' एवं ऋतुसंहार आदि शृंगारिक गीतिकाव्य के उदाहरण हैं। धार्मिक गीतिकाव्य में पण्डितराज जगन्नाथ के सुधालहरी, अमृतलहरी, गंगालहरी, लक्ष्मीलहरी आदि प्रमुख हैं। भाषा (संस्कृत, प्राकृतादि) या विभाषा (शौरसेनी, बाह्लिकादि प्राकृत भाषा) के नियम के अनुसार रचित पद्ययुक्त सर्ग से रहित जिसमें सब सन्धियाँ न हों ऐसे प्रबन्ध को काव्य कहते है, जैसे –भिक्षाटन एवं आर्याविलास।

भाषाविभाषानियमात्काव्यं सर्गसमुज्झितम्।

एकार्थप्रवणैः पद्यैः सन्धिसामग्रयवर्जितम्।।328।।

यथा– भिक्षाटनम्, आर्याविलासश्च।

महाकाव्य के एक अंश का अनुसरण करने वाला पद्यसमूह खण्डकाव्य कहलाता है। जैसे– मेघदूत आदि।

खण्डकाव्यं भवेत्काव्यस्यैकदेशानुसारि च।

यथा– मेघदूतादि।।

काव्य के एक देश अर्थात् एक भाग का अनुसरण करने वाला खण्डकाव्य कहलाता है, जैसे मेघदूत आदि।

15.2.6 चम्पूकाव्य

चम्पूकाव्य गद्य और पद्य दोनों से मिश्रित काव्य होता है। भोज ने 'रामायणचम्पू' (बालकाण्ड 3) में कहा है कि चम्पूकाव्य में गद्य और पद्य का वही सम्बन्ध है जो संगीत में गीत और वाद्य का। कृष्णयजुर्वेद के तैत्तिरीयसंहिता तथा अथर्ववेद में गद्यपद्यात्मक शैली पाई जाती है। इसी प्रकार उपनिषदों, पुराणों में भी गद्यपद्य का प्रयोग मिलता है। चम्पूकाव्य का सर्वप्राचीन ग्रन्थ त्रिविक्रमभट्ट का 'नलचम्पू' जिसे 'दमयन्तीकथा' के नाम से भी जाना जाता है। इसका रचनाकाल लगभग 915 ई0 है। इसका कथानक महाभारत के 'नलोपाख्यान' में वर्णित है। नलचम्पू में सात उच्छ्वास हैं। जैन-कवि सोमदेवसूरि ने 959ई0 में 'यशस्तिलकचम्पू' की रचना की। भोज (1018-1063ई0) ने 'रामायणचम्पू' की रचना की। इसी प्रकार अन्य चम्पूकाव्य भी हैं।

जिसमें गद्य और पद्य दोनों हों उस काव्य को चम्पू कहते है, जैसे देशराजचरितादि।

गद्यपद्यमयं काव्यं चम्पूरित्यभिधीयते।।336।।

यथा–देशराजचरितम्।।

15.3 सारांश

आप जानते हैं कि साहित्यदर्पण एक काव्यशास्त्रीय गन्थ है। इस ग्रन्थ में आचार्य विश्वनाथ ने काव्य एवं नाट्य के सभी पक्षों पर प्रकाश डाला है। गद्यकाव्य कथा एवं आख्यायिका के भेद से दो प्रकार का होता है। इसके अतिरिक्त मुक्तक, वृत्तगन्धि, उत्कलिकाप्राय और चूर्णक भी गद्यकाव्य के अवान्तर भेद हैं जिसका अध्ययन आपने इस इकाई में किया है। आपने मुक्तक एवं युग्मक काव्य के लक्षण एवं उदाहरणों का अध्ययन किया तथा यह जाना कि मुक्तक एवं युग्मक काव्य क्या हैं? आप जानते हैं कि सर्गबद्ध रचना महाकाव्य कहलाती है, जिसका नायक धीरोदात्त प्रकृति का होता है। इसका इतिवृत्त ऐतिहासिक तथा लोकप्रसिद्ध होता है। आपने इस इकाई में खण्डकाव्य का लक्षण पढ़ा जिसके अनुसार महाकाव्य के एक अंश का अनुसरण करने वाला पद समूह खण्डकाव्य कहलाता है। गद्य तथा पद्य से युक्त

काव्य को चम्पू काव्य कहते हैं। इस प्रकार इस इकाई में आपने काव्य एवं उसके भेदों का विस्तृत अध्ययन किया।

15.4 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- साहित्यदर्पणम्,व्याख्याकार आचार्य शेषराजशर्मा रेग्मी, चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी, 2010
- साहित्यदर्पणः, व्याख्याकारः पं. हरेकान्तमिश्रः, चौखम्भा ओरियन्टालिया, दिल्ली,2017
- साहित्यदर्पणः, व्याख्याकार श्रीशालिग्रामशास्त्रि, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली,1986।
- साहित्यदर्पण–विश्वनाथ, (व्याख्याकार)सत्यव्रतसिंह, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 1988
- संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास, डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी, रामनारायणलाल, विजयकुमार, कटरा, प्रयागराज।

15.5 अभ्यास प्रश्न

1 मुक्तक का लक्षण देते हुए उसकी विशेषता बताइए।
2 युग्मक पर टिप्पणी लिखिए।
3 महाकाव्य का लक्षण देते हुए इस पर प्रकाश डालिए।
4 खण्डकाव्य की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।